FOR U.G.-II (Hons.)
Paper- IV

ROLE OF PHILOSOPHERS IN THE FRENCH REVOLUTION

Page No.:
Date:
YOUVA

फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका

फ्रांस में क्रांति की चेतना को गति प्रदान करने में दार्शनिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मॉण्टेस्क्यू, वाल्टेयर, रूसो, दिदरो जैसे प्रबोधन-दार्शनिकों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों के माध्यम से यह एहसास दिलाया कि तत्कालीन व्यवस्था शोषणकारी है तथा इसे बदला जा सकता है। इन्होंने अपने विचारों से क्रांति के बाद की व्यवस्था के स्वरूप को भी परिभाषित किया।

फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका को लेकर इतिहासकारों में विवाद की स्थिति है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दार्शनिकों ने क्रांति की परिस्थितियों को जन्म देकर क्रांति को उत्पन्न किया तो कतिपय इतिहासकार का कहना है कि क्रांति का स्रोत तो उस समय के जीवन के दोषों में था, दार्शनिकों ने क्रांति उत्पन्न नहीं की। इस लिहाज से दार्शनिकों की भूमिका एवं इनके योगदान को समझना वांछनीय होगा।

(A) मॉण्टेस्क्यू (1689-1755 ई.) :- मॉण्टेस्क्यू ने राजा के दैवीय सिद्धांत का खंडन किया तथा राजा की स्वेच्छाचारिता को गलत बताया। उसने कहा कि फ्रांसीसी सरकार निरंकुश सरकार है क्योंकि राजा में ही समस्त शक्तियाँ केन्द्रित है। इसके कारण फ्रांसीसी जनता को स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Spirit of Laws (1748) में इसने शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसमें इसने इंग्लैंड की शासन प्रणाली को आधार मानकर कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका जैसे सरकार के तीन प्रमुख अंगों के पृथकत्व पर जोर दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि मॉण्टेस्क्यू ने शक्ति पृथक्करण की बात करके फ्रांस की निरंकुश राजव्यवस्था पर चोट की। उसके ये विचार इतने लोकप्रिय हुये कि उसकी पुस्तक के तीन वर्षों में छः संस्करण प्रकाशित हुए। मॉण्टेस्क्यू ने न तो क्रांति की बात की और न ही राजतंत्र को समाप्त करने की। उसने केवल निरंकुश राजतंत्र के दोषों को उजागर किया और संवैधानिक राजतंत्र की बात की।

(B) वाल्टेयर (1694-1778 ई.) :- बादशाह के नाम से संबोधित

Scanned with CamScanner

वाल्टेयर 18वीं सदी के सम्पूर्ण विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता था। अपने देश के लिए वह ऐनाशॉ, धर्मसुधार तथा क्रांति तीनों के प्रतिनिधित्व करता था। अपनी पुस्तक 'एदिप तथा स्वत' के माध्यम से ब्रिटेन की उदार राजनीति, धर्म और विचार स्वतन्त्रता का विशद चित्रण किया तथा पुरातन फ्रांसीसी अवस्था से उसकी तुलना की तथा फ्रांसीसी समाज में व्याप्त बुराइयों एवं कमियों का उल्लेख किया। उसने तत्कालीन धार्मिक अवस्था और चर्च को अपना निशाना बनाया। अपने व्यंग्यात्मक लेखों द्वारा उसने पादरियों के भ्रष्टाचार एवं दुष्चरित्रता का भंडाफोड़ किया। उसने चर्च पर प्रहार करते हुये कहा कि अब तो कोई ईसाई बचा नहीं क्योंकि एक ही ईसाई था उसे सूली पर चढ़ा दिया गया। उसके लेखों को पढ़कर तत्कालीन चर्च और पादरियों के प्रति जनता की श्रद्धा एकदम समाप्त हो गयी। वाल्टेयर ने बताया कि जनता को वही बात ठीक माननी चाहिए जो उनके विचारों एवं विवेचना की कसौटी पर खरा उतरे। विचारों के द्वारा ही किसी संस्था के गुण-दोषों को जाना जा सकता है तथा अन्धविश्वास को दूर किया जा सकता है। वाल्टेयर इंग्लैंड के संवैधानिक राजतंत्र के अनुरूप ही फ्रांस में अवस्था स्थापित करना चाहता था। उसने कहा था कि- 'मैं सौ चूहों के स्थान पर एक सिंह का शासन पसंद करता हूँ।' स्पष्टतः वाल्टेयर ने भी क्रांति की बात नहीं की लेकिन विचार स्वतन्त्रता की पृष्ठभूमि निर्मित की।

(c) रूसो (1712-1778 ई.) : रूसो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Social Contract' के माध्यम से मनुष्य की स्वतन्त्रता की वकालत की। इसने कहा कि मनुष्य स्वतंत्र पैदा होते हुए भी सर्वत्र जंजीरों से जकड़ा हुआ है। इन जंजीरों से मुक्ति पाने का एक ही तरीका है कि हम प्राकृतिक आदिम अवस्था की ओर लौटें। अपनी पुस्तक Social Contract में रूसो ने बतलाया कि राजा का पद दैवीय वस्तु नहीं है। जनता ने ही एक समय राजा को अधिकार दिये थे जिससे कि वह उनको शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने में सहायता करें। सामूहिक इच्छा से बने राज्य का यह एक अनिवार्य तथा सार्वभौम कर्तव्य है कि वह सारे समाज को सर्वोपरि मानते हुये कार्य को संचालित करें। इस प्रकार रूसो का दृढ़ विश्वास

Scanned with CamScanner

था कि सर्वोपरि सत्ता जनता के हाथ में होनी चाहिए किसी एक व्यक्ति या संस्था के हाथ में नहीं। सार्वभौम सत्ता जनता की इच्छा में निहित है जिसे "सामान्य इच्छा" (General will) कहा गया। रूसो ने मानव अधिकारों की घोषणा कि और स्वतंत्रता तथा समानता को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार बताया जिनकी प्राप्ति एक प्रजातांत्रिक अवस्था में हो सकती है। अतः राजतंत्र के स्थान पर प्रजातंत्र की स्थापना होनी चाहिए और यदि राजा प्रजा को अधिकार नहीं देता तो उसे लड़कर यह अधिकार प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि रूसो ने भी क्रांति की बात नहीं की लेकिन सभी व्यक्ति को स्वतंत्र एवं समान माना और फ्रांसीसी क्रांति के नारे 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' उसी के विचारों से प्रभावित थे। नेपोलियन ने रूसो के सन्दर्भ में कहा था - यदि रूसो न होता तो फ्रांस में क्रांति भी नहीं हुई होती। लुई XVI अपने को बचा सकता था यदि उसने लेखन को नियंत्रित किया होता।" Social Contract की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक वर्ष में उसके 13 संस्करण प्रकाशित हुए।

(D) अन्य दार्शनिक : 18वीं सदी के श्रेष्ठ विचारकों की रचनाओं को संकलित कर आम जनता तक पहुँचाने का श्रेय फ्रांसीसी विद्वान "दिदरो" (1713-84) को दिया जाता है। इसने एक ज्ञानकोष 'Encyclopedia' का प्रकाशन किया जिसमें शासन की बुराइयों, चर्च की श्रेष्ठता तथा हर क्षेत्र में व्याप्त असमानता को उजागर किया। फ्रांसीसी सरकार ने दिदरो को अपना घोर शत्रु मानते हुये उसके पुस्तक पर प्रतिबंध लगाये।

"क्वेसने" एक अर्थशास्त्री था तथा व्यापारियों पर कर लगाने का घोर विरोधी था। वह उन्मुक्त व्यापार के सिद्धांत का समर्थक था। वाणिज्यवादी सिद्धांत की इसने तीखी आलोचना की और आर्थिक क्रियाकलापों में सरकारी हस्तक्षेप का कड़ा विरोध किया। उसके सिद्धांत का ~~पर~~ बुर्जुवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा।

फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका का तटस्थ विश्लेषण करने पर पता चलता है कि क्रांति के विस्फोट में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण जरूर थी लेकिन दार्शनिक विचारधारा ने ही

Scanned with CamScanner

क्रांति को जन्म दिया जैसा कि रूसो के संदर्भ में नेपोलियन मानना है, उचित नहीं है। किसी भी दार्शनिक ने न तो क्रांति की बात की और न ही क्रांति के लिए कोई संगठन बनाया और न ही क्रांति का आह्वान किया। वे क्रांति के नहीं बल्कि सुधारों के पक्षधर थे इसीकारण राजतंत्र को उखाड़ फेकने के बजाये उन्होंने संवैधानिक राजतंत्र की बात की। किंतु फ्रांसीसी क्रांति में इनकी भूमिका को नजरअंदाज करना इतिहास की दृष्टि से भूल होगी। विचारकों ने फ्रांसीसी क्रांति का विस्फोट नहीं कराया, बल्कि अपने उग्र विचारों से उसको निकट ला दिया। उन्होंने राजनीति और समाज की बुराइयों पर आघात करके सुधार लाने की प्रेरणा प्रदान की। कुल मिलाकर देखा जाये तो दार्शनिकों ने क्रांति की मानसिक पृष्ठभूमि निर्मित की।

—X—

Scanned with CamScanner